पाठ-2 (सूरदास के पद)

(अभ्यास हल सहित) (क: विषय-बोध)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक दो पंक्तियों में दीजिए:

प्रश्न1: यशोदा श्री कृष्ण को किस प्रकार सुला रही है?

उत्तर: यशोदा श्री कृष्ण को पालने में झूला झुलाते हु , दुलारते हु , पुकारते हुए तथा कुछ गाते हुए सुला रही है।

प्रश्न2: यशोदा श्री कृष्ण को दूर क्यों नहीं खेलने जाने देती है ?

उत्तर : यशोदा श्री कृष्ण को दूर खेलने इसलिए नहीं जाने देती क्योंकि उसे डर है कि कहीं किसी की गाय उन्हें मार न दे ।

प्रश्न3: यशोदा श्री कृष्ण को दूध पीने के लिए क्या प्रलोभन देती है?

उत्तर : यशोदा श्री कृष्ण को कहती है कि यदि वह दूध पी लेंगे तो उनकी चोटी भी बलराम की चोटी के समान लंबी मोटी हो जाएगी ।

प्रश्न4: श्री कृष्ण यशोदा से क्या खाने की माँग करते हैं ?

उत्तर: श्री कृष्ण यशोदा से खाने के लिए माखन रोटी की माँग करते हैं ।

प्रश्न5: अंतिम पद में श्रीकृष्ण अपनी माँ से क्या हठ कर रहे हैं?

उत्तर: अंतिम पद में श्री कृष्ण अपनी माँ से गाय चराने जाने की हठ कर रहे हैं। वे अपने हाथों से तोड़कर फल खाना चाहते हैं।

सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

मैया कबहुं बढ़ैगी चोटी।
किती बेर मोहि दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी॥
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों, ह्वै है लांबी मोटी।
काढ़त गुहत न्हवावत जैहै नागिन-सी भुई लोटी॥
काचो दूध पियावति पचि पचि, देति न माखन रोटी।
सूरदास चिरजीवौ दोउ भैया, हरि हलधर की जोटी॥

प्रसंग: प्रस्तुत पद सूरदास जी द्वारा रचित सूरदास के पद से अवतरित है।यहाँ सूरदास ने कृष्ण जीके बाल सुलभ रूप का अनोखा वर्णन करते हुए कृष्ण द्वारा यशोदा को उलाहना देने की बात की है।

व्याख्या: भक्त सूरदास जी कृष्ण जी के बाल रूप का वर्णन करते हुए कहते हैं कि मैया! मेरी चोटी कब बढ़ेगी ? मुझे दूध पीते कितनी देर हो गयी पर यह तो अब भी छोटी ही है। माँ, तुम तो कहती हो कि मेरी यह चोटी बलराम भैया की चोटी के समान लम्बी और मोटी हो जाएगी और कंघी करते, गूँथते तथा स्नान कराते समय सर्पिणी के समान भूमि तक लोटने (लटकने) लगेगी (वह तेरी बात ठीक नहीं जान पड़ती)। मैया! मुझे बार-बार परिश्रम करके कच्चा दूध पिलाती हो, मक्खन-रोटी नहीं देती। पद के अंत में सूरदास जी कहते हैं कि बलराम घनश्याम की जोड़ी अनुपम , ये दोनों भाई चिरंजीवी हों।

विशेष: सूरदास ने बालकृष्ण द्वारा मैया यशोदा को शिकायत करने का स्वाभाविक वर्णन किया है

आजु मैं गाइ चरावन जैहौं।
बृन्दावन के भांति भांति फल अपने कर मैं खेहौं॥
ऐसी बात कहौ जनि बारे देखौ अपनी भांति।
तनक तनक पग चलिहौ कैसें आवत ह्वै है राति॥
प्रात जात गैया लै चारन घर आवत हैं सांझ।
तुम्हारे कमल बदन कुम्हिलैहे रेंगत घामहि मांझ॥
तेरी सौं मोहि घाम न लागत भूख नहीं कछु नेक।
सूरदास प्रभु कह्यो न मानत परयो अपनी टेक॥

व्याख्या: सूरदास जी कहते हैं कि एक बार बालकृष्ण ने हठ पकड़ लिया कि मैया आज तो मैं गौएं चराने जाऊँगा। साथ ही वृन्दावन के वन में उगने वाले नाना भांति के फलों को भी अपने हाथों से खाऊँगा। इस पर माँ यशोदा ने कृष्ण जी को समझाया कि अभी तो तू बहुत छोटा है। इन छोटे-छोटे पैरों से तू कैसे चल पाएगा.. और फिर लौटते समय रात्रि भी हो जाती है। तुझ से अधिक आयु के लोग गायों को चराने के लिए प्रात: घर से निकलते हैं और संध्या होने पर लौटते हैं। सारे दिन धूप में वन-वन भटकना पड़ता है। फिर तेरा शरीर पुष्प के समान कोमल है, यह धूप को कैसे सहन कर पाएगा। यशोदा के समझाने का कृष्ण पर कोई प्रभाव नहीं हुआ, बल्कि उलटकर बोले, मैया! मैं तेरी सौगंध खाकर कहता हूँ कि मुझे धूप नहीं लगती और न ही भूख सताती है। सूरदास कहते हैं कि प्रभु बाल श्रीकृष्ण ने यशोदा की एक नहीं मानी और अपनी ही बात पर अटल रहे।

विशेष:1 कवि ने बाल हठ का सजीव वर्णन किया है।

(ख: भाषा-बोध)

1: नीचे दिए गए सूरदास के पदों में प्रयुक्त ब्रज भाषा के शब्दों के लिए खड़ी बोली हिंदी के शब्द लिखिए:

ब्रजभाषा के शब्द	खड़ी बोली के शब्द	ब्रजभाषा के शब्द	खड़ी बोली के शब्द
कछु	**कुछ**	**निंदरिया**	**नींद**
तोको	**तुमको**	**कान्ह**	**कृष्ण**
कबहुँ	**कभी**	**इहिं**	**यहाँ**
किति	**कितनी**	**भुई**	**भूमि**
अरु	**और**	**तुम्हरे**	**तुम्हारे**

2: निम्नलिखित एकवचन शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए :

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
पलक	**पलकें**	**गोपी**	**गोपियाँ**
नागिन	**नागिनें**	**चोटी**	**चोटियाँ**
ग्वाला	**ग्वाले**	**रोटी**	**रोटियाँ**